संस्कृत विभाग, मानविकी संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची में डी.लिट्. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध परियोजना का प्रारूप

शोध परियोजना का शीर्षक

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में प्रो. (डॉ.) चन्द्रकान्त शुक्ल की शोध-कृतियों की प्रासंगिकता

शोध निर्देशिका

(प्रो. (डॉ.) अर्चना कुमारी दुबे)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग सह
मानविकी संकायाध्यक्ष
राँची विश्वविद्यालय, राँची

गवेषक

(डॉ. जितेश पासवान)
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
सिमडेगा महाविद्यालय, सिमडेगा

2025

शोध परियोजना का शीर्षक

"भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में प्रो. (डॉ.) चन्द्रकान्त शुक्ल की शोध-कृतियों की प्रासंगिकता"

शोध परियोजना का परिचयात्मक विवरण

भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय संस्कृति के विभिन्न कालखण्डों से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान तथा बुद्धिमता का प्रतिनिधित्व करती है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय उन्नति तथा सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा परमावश्यक है। यह समावेशी,करुणामूलक, समता मूलक रही है, इसीलिए सदैव अनुकरणीय रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा अपने स्वर्णिम अतीत के साथ बहुत ही समृद्ध रही है जिसका क्रम आज भी गतिमान है और अपने गौरवशाली अतीत के कारण संपूर्ण विश्व की जिज्ञासा का केंद्र है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक और समृद्ध ज्ञान है जो मनुष्य के समग्र विकास, समाज के लिए उपयोगी, सभ्य नागरिक निर्माण और आध्यात्मिकता पर बल देता है। यह ऐसे ही ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करने की एक व्यवस्थित कला है। यह मानव जीवन के सभी पहलुओं पर ध्यान देती है। यह परम्परा ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, कला, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान देती है। यह मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण विरासत है जिसे संरक्षित और विकसित करने की आवश्यकता है। इससे मनुष्य को भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी प्राप्त होती है और साथ ही परम पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्ति हेतु भी मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

यह परम्परा से चला आ रहा ज्ञान है जिसे गुरु शिष्य परम्परा के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। यह परम्परा भारत की संस्कृति और दर्शन से जुड़ा है। वैश्विक धरातल पर भारतीय ज्ञान परंपरा

अपनी अलग पहचान रखती है राजनीति, समाज नीति अर्थनीति, संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान, कौशल, योग, व्यवहार, भाषा, विज्ञान, अनुसंधान, तर्क, विश्लेषण आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति हेतु सम्पूर्ण विश्व भारत की ज्ञान परम्परा की ओर देखती है और समाधान पाती है। संपूर्ण विश्व का मानव समाज भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रभावित है। यह ज्ञान परम्परा अपने ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई, जिसमें शिक्षाक्षेत्र के हर स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर जोर दिया गया है जिससे आने वाली पीढ़ी अपनी गौरवशाली परम्परा से जुड़ पाए। पर्यावरण के अनुकूल आचरण कर सके और सतत विकास की ओर बढ़े।

भारतीय ज्ञान परम्परा हजारों वर्षों की बौद्धिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक साधना की परिणति है। इस परम्परा में वेद, वेदांग उपनिषद, दर्शन, पुराण, अर्थशास्त्र, नाट्य शास्त्र, स्मृति ग्रंथ, धर्म सूत्र, लौकिक संस्कृत साहित्य, व्याकरण, चिकित्सा, खगोलशास्त्र आदि का अपूर्व योगदान रहा है। इस तरह यह ज्ञान परंपरा कहीं लिखित तो कहीं बिना लिखित अवस्था में भी परंपरा में चली आ रही है जो सदियों से मानव सभ्यता को आकर दे रही है यह ज्ञान अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुए हैं। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान, प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या आदि सभी प्रकार के भौतिक और पारलौकिक एक विषयों का अद्भुत संगम है इसका विस्तृत रूप से विवेचन स्तोत्र ग्रंथ के अध्यायों में प्रस्तुत करने का प्रयास होगा।

समकालीन भारत में इस परम्परा के मूल्यांकन और नवपाठ की दिशा में कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्हीं में प्रो. चन्द्रकान्त एक प्रमुख नाम हैं, जिनकी शोधकृतियाँ भारतीय बौद्धिक विरासत की आधुनिक पुनर्परिभाषा में सहायक सिद्ध हुई हैं। परिणामस्वरूप इन्होने अनेक

सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किया है। देश में तथा विदेशों में भी भारतीय ज्ञान परम्परा पर अनेकों शोध आलेख संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी एवं भोजपुरी आदि भाषाओं में प्रस्तुत किए हैं, व्याख्यान दिए हैं। निरन्तर भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास हेतु प्रयत्नशील प्रो. शुक्ल ने 100 से अधिक शोध पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने वाले विषयों पर लिखें है। वैदिक संस्कृत साहित्य से लेकर लौकिक संस्कृत साहित्य तक, पुराण, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, स्मृतिग्रन्थ, दर्शन, आयुर्वेद, नाटक, गद्य, पद्य आदि सभी विषयों पर 30 से अधिक शोध प्रबंधों का सफल निर्देशन किया है। जो सभी भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित लघु शोध परियोजना कालिदास साहित्य एवं कामकला तथा प्रमुख शोध परियोजना कालिदास साहित्य एवं धर्मशास्त्र भी भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन सबके अतिरिक्त भी इन्होने अनेक शोध कृतियाँ लिखी है जो भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उन सभी पर शोध प्रबन्ध में विस्तार से विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है।

जुलाई 1972 से जनवरी 2011 तक 38 वर्ष 7 महीने तक विश्वविद्यालय में अध्यापन उपरांत अभी भी अक्टूबर 2020 से भारत में रहते हुए मॉरिशस विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विषय के छात्रों का अध्यापन कर रहे हैं। स्वयं निरन्तर अध्ययनरत आज भी भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। ये संस्कृत जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान् हैं। इन्होने राँची विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं मानविकी संकायाध्यक्ष तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति एवं कुलपति के पद को भी सुशोभित किया है। देश-विदेश में आयोजित संस्कृत विषयक संगोष्ठियों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही है। इन्होने इसके अलावा भी अनेक पदों को सुशोभित किया है, जिसकी चर्चा इस शोध प्रबन्ध के दूसरे अध्याय में होंगी। संस्कृत

भाषा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रो. शुक्ल ने बोलचाल की संस्कृत सीखाने के लिए कई शिविरों का सफल आयोजन भी किया।

संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में असाधारण और अनुकरणीय योगदान हेतु वर्ष 2013 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित झारखंड के एकमात्र विद्वान् प्रो. (डॉ.) चन्द्रकान्त शुक्ल ने भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में अपनी शोध कृतियों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सम्प्रति वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल गौरवशाली अतीत के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत और व्यवहारिक बौद्धिक प्रणाली के रूप में समझने की आवश्यकता है। प्रो.चन्द्रकान्त ने जिस दृष्टि से प्राचीन ग्रंथों और परम्पराओं का विश्लेषण किया है, वह भारतीय विचारधारा की आधुनिक पुनर्स्थापना में मार्गदर्शक हैं। उनकी कृतियों की प्रासंगिकता का सम्यक् अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से उपयोगी है, बल्कि यह राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में भी योगदान देगा।

इस शोध परियोजना में प्रो. चन्द्रकान्त की उन सभी शोध कृतियों के पुनरीक्षण का प्रयास होगा, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों पर केंद्रित हैं, तथा उनके प्रासंगिक महत्व को विश्लेषित करने का प्रयास होगा।

प्रस्तुत शोध कार्य से सम्बद्ध कतिपय तथ्य एवं जिज्ञासाएँ

प्रो. शुक्ल का संपूर्ण जीवन ही अनुकरणीय है। भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित करने हेतु निरंतर प्राचीन काल से ही कार्य होते आ रहे हैं। इस शोध कार्य में प्रो. चन्द्रकान्त शुक्ल के व्यक्तित्व और शोध कृतियों का अध्ययन कर भारतीय ज्ञान परम्परा के विषयों को ढूंढ कर, उसे विशेष रूप से उल्लेखित करना है और उनका विश्लेषण भी करना है जिससे भावी पीढ़ी प्रो. शुक्ल के कार्यों का अनुकरण करें साथ ही उनके शोधों से लाभ उठाएँ।

प्रो. शुक्ल के व्यक्तित्व और कृतित्व से थोड़ा ही परिचित होकर मैं उनकी तरह होने लगा। मुझमें जो बदलाव आये, जिससे मेरा जीवन बहुत परिवर्तित हुआ। इनका चिंतन करने से मन में अनेक जिज्ञासाएं उत्पन्न होती हैं कि किस प्रकार यह व्यक्तित्व इस तरह अनुकरणीय है। इन्होंने इतने सारे कार्य किये और आज भी निरंतर पठन-पाठन में लगे हुए उनकी इस शक्ति का स्रोत को ढूंढना भी इस शोध कार्य का उद्देश्य होगा।

प्रस्तुत शोध कार्य का औचित्य एवं लाभ

1. भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों में मानव समाज की आस्था को पुनर्जीवित करना।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित एवं विकसित करने में डॉ. शुक्ल के योगदान को समाज के समक्ष लाना।
3. यह शोध कार्य मानव जीवन को गतिशील बनाने में सहायक होगा।
4. समाज में सकारात्मक चिंतन का विकास होगा।
5. विविध आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक समस्याओं का समाधान होगा।

शोध के मुख्य उद्देश्य

1. प्रो. चन्द्रकान्त की प्रायः सभी शोध कृतियों का गहन अध्ययन कर भारतीय ज्ञान परम्परा को जानना समझना और भावी पीढ़ी तक पहुंचाना।
2. उनकी कृतियों में प्रस्तुत भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों की पहचाना और विश्लेषित कर नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना।
3. भारतीय समाज में इन कृतियों की समकालीन प्रासंगिकता को दर्शाना और सतत विकास को बढ़ावा देना।

4. यह समझना कि प्रो. चन्द्रकान्त की शोध कृतियाँ किस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में सहायक है।
5. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण।
6. तत्कालीन समस्याओं का समाधान हेतु प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन।
7. आंतरिक शांति और मन की भावनाओं को नियंत्रित करने के मूल मन्त्रों को ढूंढना।
8. सामाजिक न्याय और समरसता को स्थापित करना।
9. स्वदेशी ज्ञान की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना। आदि

शोध प्रश्न

1. भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है?
2. भारतीय ज्ञान परंपरा का मानव जीवन के साथ क्या संबंध है?
3. भारतीय ज्ञान परंपरा मानव जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है?
4. मानव समाज को भारतीय ज्ञान परंपरा की क्या आवश्यकता है?
5. श्रेष्ठ जीवन की समुचित व्यवस्था कैसे की जा सकती है?
6. सफल जीवन के क्या मूल मंत्र हैं?
7. प्रो. शुक्ल द्वारा बताए गए सफल जीवन के सहायक और बाधक तत्व क्या है?
8. जीवन के मूल उद्देश्य क्या है?

अनुसंधान की विधियों का उपयोग

1. अवलोकन विधि - इस प्रस्तावित शोध प्रबंध में भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास की दृष्टि से प्रो. शुक्ल के सभी शोध कृतियों का अवलोकन प्रधानता से होगा जो संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में है। इनके निर्देशन में हुए शोध प्रबंध हो का भी अवलोकन एवं विश्लेषण होगा। प्रो. शुक्ल द्वारा संपादित पुस्तकों और प्राक्कथनों का भी गहन अध्ययन किया जाएगा। उनके द्वारा विभिन्न अवसरों पर दिए गए व्याख्यानों को भी इस शोध कार्य में शामिल कर उसकी प्रासंगिकता पर विचार प्रस्तुत होंगे।

प्रो. शुक्ल पर लिखे गए पत्र पत्रिकाओं में उद्गारों को भी इससे में शामिल कर उनका भी भारतीय ज्ञान परंपरा में के विकास की दृष्टि से विवेचन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

2. तथ्य संग्रह विधि - प्रस्तुत शोध परियोजना से सम्बद्ध विविध तथ्यों के संकलन की अपेक्षा होगी। तथ्यों के संग्रहण में विविध भाषाओं के तथ्य संग्रह किए जाएंगे लेकिन उनका निबंधन हिंदी भाषा में ही किया जाएगा।

3. साक्षात्कार विधि - प्रो. शुक्ल के साथ साथ उनके परिवार जनों, शिष्यों और परिचित लोगों से मिलना और उनके विषय में उनके विचारों को जानना भी अपेक्षित होगा। यथासंभव एवं आवश्यकतानुसार उनके विचारों को शोध प्रबंध में शामिल कर जनकल्याणकारी तथ्यों को प्रकट करने का प्रयास किया जाएगा।

इस प्रकार शोध के प्राथमिक, द्वितीयक स्रोतों सहित साक्षात्कार विधि को भी तथा विभिन्न समाचार पत्रों पत्रिकाओं में भी छापे गए प्रो. शुक्ल के विषय में उद्गारों को भी आवश्यकता अनुसार इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत करने का प्रयास होगा।

इस प्रस्तावित शोध परियोजना को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर संपन्न किए जाने का प्रस्ताव है-

भूमिका

एतद्विषयक विहित अन्य कार्य.... प्रस्तुत कार्य की परिव्याप्ति तथा सीमाएँ। शोध प्रविधि।

प्रथम अध्यायः भारतीय ज्ञान परम्परा का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्यायः प्रो (डॉ.) चन्द्रकान्त शुक्ल का व्यक्तित्व

(क) जन्म स्थान एवं समय

(ख) वंश परम्परा

(ग) शिक्षा

(घ) गुरु परम्परा

(ङ) साहित्यिक उपलब्धियाँ

(च) पुरस्कार एवं सम्मान

तृतीय अध्यायः भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल की पीएच. डी. शोध-प्रबन्ध की प्रासंगिकता

चतुर्थ अध्यायः भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल की डी.लिट् शोध प्रबन्ध की प्रासंगिकता

पञ्चम अध्यायः भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल द्वारा लिखित आलेखों तथा शोध आलेखों की प्रासंगिकता

षष्ठ अध्यायः भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल द्वारा सम्पादित पुस्तकों एवं प्राक्कथनों आदि की प्रासंगिकता

<u>सप्तम अध्यायः</u> भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल द्वारा निर्देशित पीएच. डी. तथा डी. लिट् शोध प्रबन्धों की प्रासंगिकता

<u>अष्टम अध्यायः</u> भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ. शुक्ल द्वारा प्रस्तुत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित लघु एवं प्रमुख शोध परियोजना (Minor and Major Research Projects) की प्रासंगिकता

<u>नवम अध्यायः</u> भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में डॉ.शुक्ल द्वारा विभिन्न अवसरों पर प्रदत व्याख्यानों की प्रासंगिकता

उपसंहार :-

विशेष : उपर्युक्त अध्यायों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन एवं परिवर्धन सम्भव है।

कतिपय सहायक ग्रंथों की सूची

संस्कृत ग्रन्थ, हिंदी ग्रन्थ, अंग्रेजी ग्रन्थ, शोध प्रबन्ध एवं पत्र- पत्रिकाएं,

1. विशाखा दत्त और उनका मुद्राराक्षस
2. संस्कृत के दार्शनिक नाटकों का संवैधानिक तत्व
3. कालिदास साहित्य एवं कामकला
4. मुद्राराक्षस परिशीलन
5. बिहार के बेदिया
6. कल्पवल्ली
7. शुक्लयशोविलास